प्रकाशक—
अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य
प्रकाशन परिषद्,
मेरठ।

तृतीय संस्करण— १९५२

मूल्य एक रुपया

मुद्रक—
मदन मोहन बी. ए.
निष्काम प्रेस,
मेरठ।

"महापुरुष" का तीसरा संस्करण प्रकाशित करते समय हमें हर्ष है। यह परवर्द्धित एवं संशोधित संस्करण है। इस बार इसमें कितने ही नये चरित्र बढ़ा दिये गये हैं, एक प्रकार से महापुरुष का यह तीसरा संस्करण बिल्कुल नया है।

"महापुरुष" में प्रत्येक महापुरुष का चरित्र सचित्र चित्रित है। इन बोलते हुए चित्रों में महापुरुषों के स्वर हैं, जिन स्वरों में जागृति है, जीवन है और पथ है। 'मित्र' जी की ऐसी उपयोगी पुस्तक का तीसरा संस्करण पाठकों को भेंट करते हुए हमें खुशी है।

—प्रकाशक

क्रम

ज्योतिवन्त महापुरुषो ! तुम्हारे तप के तेज से यह पृथ्वी प्रकाशित है। तुम कभी न बुझने वाले दीपक हो ! तुमने विष पिया और अमृत दिया है। तुमने मुक्ति पथ के दरवाज़े खोले हैं। तुम्हारी साधना से सिद्धि आरती लेकर खड़ी है। तुम्हारे सींचने से यह धरा हरी हुई है। तुम्हारे श्रम से संसार में मोती बरसे हैं। तुम्हारी चेतना युग युग की चेतना है। श्रद्धा तुम पर सुमन चढ़ाती है।

धरती के देवताओ ! तुम्हारी वाणी से संसार को स्वर मिला है। तुम्हारा जीवन जगत का आधार है। तुम्हारी मृत्यु मृत्यु की मृत्यु है। तुम संसार के काँटों में खिलने वाले कुसुम हो। साधना की गोद से फूटने वाली सिद्धि तुम्हारी ज़िन्दगी है।

तुम्हें पाकर हमने धरती पर स्वर्ग पाया। तुम आये दीपक जल उठे, तुम गये आँखें आंसुओं से भर गईं।

जग-मंदिर के दीपको ! तुम हमें सदैव प्रकाश देते रहो। तुम अपनी किरणें हमारे ऊपर से कभी समेट कर न ले जाना। तुम कवि की वाणी के साथ साथ रहना। तुम्हारे बिना जग भार न सँभाल सकेगा। तुम हृदय में बैठ, प्रतिभा का अमृत उड़ेलते चलो ! तुम मुझे भारत और भारती की उपासना के लिये ज्योति दो !



ज्योतिवन्तों की जय

देश के वलिदानों की जय, दीप के परवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय।
अमृत इनके स्वर से झर झर, अमर करता धरती का स्वर,
उजाला इनका यश अक्षय ॥

तपस्वी महापुरुष हैं ये, यशस्वी कलाकार हैं ये।
क्रान्ति की आग, शान्ति के जल, जीत के दीप प्यार हैं ये ॥
प्रजा के प्राण, प्रजा के धन, देश की आन शान हैं ये।
श्रमिक के मन, कृपक के त्याग, दान सम्मान ध्यान हैं ये ॥

तिरंगे के त्यागों की जय, शहीदों के झण्डे की जय,
रक्त दे किया मुक्ति-धन क्रय।
देश के बलिदानों की जय, दीप के परवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय ॥

देश-पूजा, प्रीति के गीत, विश्व भर के शिक्षक हैं ये।
ज्योति के शलभ, मुक्ति के पथ, दिवाली के दीपक हैं ये ॥
शहीदों के मरघट के मन, मातृ-मन्दिर के धन हैं ये।
कफ़न तक खींच रहे हैं जो, उन्हों के लिये कफ़न हैं ये ॥

मौत तक गई इन्हीं से डर, काँपते दानव थर थर थर,
इन्हों से अन्धकार को भय।
देश के बलिदानों की जय, दीप के परवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥

तेज के रवि, शान्ति के चाँद, डूबती नौका के नाविक।
देश-गौरव, राष्ट्र के फूल, गरीबों के मन के मालिक॥
गुलामी के लिये विष अग्नि, तिरंगे रूप, धरा के धन।
दया के शिव, मृतक के प्राण, राष्ट्र के सुन्दर परिवर्त्तन॥

धरा के हल, नये निर्माण, ज्योति की लौ, युगों के प्राण,
लीक धरती पर इनकी लय।
देश के बलिदानों की जय, दीप के परवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥

विजय के लहराते झण्डे; अश्रु के अङ्गारे हैं ये।
अमर ये प्राणों के मृदु स्वर, सत्य के 'ध्रुव तारे' हैं ये।
देश के ज्योतिवन्त पथ हैं, प्रेम के परवाने हैं ये।
मुक्ति की पिये हुए मदिरा, भक्ति के मयख़ाने हैं ये॥

उठाया वीरों ने झण्डा, गगन में फहराया झण्डा,
हमारे दीपक मृत्युञ्जय।
देश के बलिदानों की जय, दीप के परवानों की जय,
हमारे नेताओं की जय॥



सन्त गांधी

सन्त, पथ-दीप, अमर सौंदर्य, प्यार की चाह, मुक्ति की राह !
विश्व की विजय, दया की मूर्ति, तुम्हें है दुनिया की परवाह ॥

भरा नयनों में माँ का हृदय,
छिपी खद्दर में जग की विजय,
चाँदनी में मानो मृदु हास,
तुम्हारी जन जन को है प्यास,

ग़रीबों के कण्ठों की आह, अछूतों के कण्ठों की आह !
सन्त, पथ-दीप, अमर सौंदर्य, प्यार की चाह, मुक्ति की राह !
विश्व की विजय, दया की मर्ति, तुम्हें है दुनिया की परवाह ॥

दूध बकरी का निर्मल पिया,
दीप पर अपना जीवन दिया,
अर्चना बनी अहिंसा शक्ति,
ज्योति बन गई तुम्हारी भक्ति,

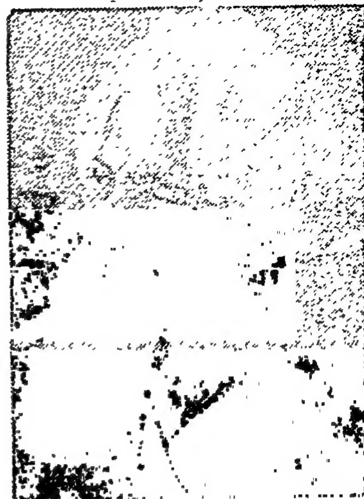
दृष्टि से खिल जाती है सृष्टि, पाप सब हो जाते हैं स्वाह !
सन्त, पथ-दीप, अमर सौंदर्य, प्यार की चाह, मुक्ति की राह !
विश्व की विजय, दया की मूर्ति, तुम्हें है दुनिया की परवाह ।।

'करो या मरो' तुम्हारा घोष,
वीर ! तुम भारत माँ के कोष,
क्रांति में शांति, शांति में जीत,
प्रीत से भरे तुम्हारे गीत,

राम के भक्त, शांति के भूप, रोकते तुम दुनिया का दाह !
सन्त, पथ-दीप, अमर सौंदर्य, प्यार की चाह, मुक्ति की राह !
विश्व की विजय, दया की मूर्ति, तुम्हें है दुनिया की परवाह ।।

फूल से तन में थे वे प्राण,
टूट जाते जिन पर विष-बाण,
कभी चर्खे पर चलते तार,
पिया विष दिया अमृत सा प्यार,

सिद्धियाँ रहीं पूजती पग, देव ! तुम रहे राह की राह !
सन्त, पथ-दीप, अमर सौंदर्य, प्यार की चाह, मुक्ति की राह !
विश्व की विजय, दया की मूर्ति, तुम्हें है दुनिया की परवाह ।।



कवीन्द्र रवीन्द्र

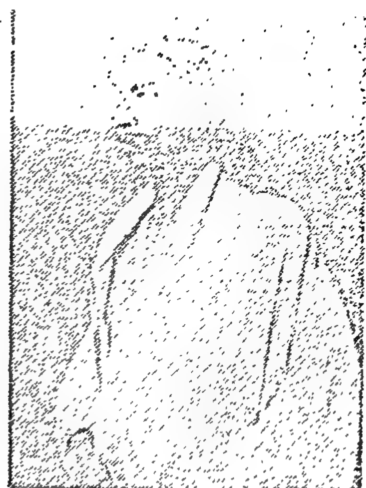
ज्योतिवन्त ! तेरी वीणा पर, मुग्ध भाव हैं सारे।
तेरे तारों पर गाते हैं, नभ के सारे तारे॥

रजत रूप से ज्योति, अमृत की– गंगा स्वर से निकली।
मानो हर हर करती कविता, मृदु अन्तर से निकली॥
कवि रवीन्द्र भावना तुम्हारी, मानस में मधु भरती।
कलाकार ! तूलिका तुम्हारी, संसृति सुन्दर करती॥

शान्तिदूत ! साधना सफल है, सिद्धि बने दृग खारे।
ज्योतिवन्त ! तेरी वीणा पर, मुग्ध भाव हैं सारे॥

अपने उर की सुरभि भर गये, गीतांजलि-प्याली में।
स्वर्गों का सौंदर्य भरा है, तेरी उजियाली में॥
भव्य ! तुम्हारी कला सत्य है, तुम हो शांति-निकेतन।
युग युग के सौंदर्य अमर तुम, तुम हो धरती के धन॥

देव तुम्हारी मधुर बीन पर, झूम रहे मन-तारे।
ज्योतिवन्त ! तेरी वीणा पर, मुग्ध भाव हैं सारे॥



योगिराज अरविन्द

खिला अमर 'अरविन्द' शान्ति से, जागा जग में ज्ञान।
मानो तप से प्रकट हुआ है, कोई सन्त महान॥

प्रथम क्रान्ति की किरण सिद्धि पा, वनी विश्व में शान्ति।
योगिराज के योग-दीप से, नष्ट हो गई भ्रान्ति॥
ऐसे मिले हमें धरती पर, धरती के आह्लाद।
जैसे श्रम करके मिलता है, निश्चित अमर प्रसाद॥

ध्यान सफल हो सिद्ध हो गया, पार हुआ जलयान।
खिला अमर 'अरविन्द' शान्ति से, जागा जग में ज्ञान॥

भस्म हुआ सच्चे भावों से, धरती का अज्ञान।
दीप जलाने पर खिलती है, जैसे ज्योति महान॥
बिना योग के युग का वैभव, रहता निष्प्रभ दीन।
जल-तप कर अरविन्द धरा पर, ऊपर हैं आसीन॥

योगिराज साधना तुम्हारी, जग की शान्ति महान।
खिला अमर 'अरविन्द' शान्ति से, जागा जग में ज्ञान॥



महात्मा तिलक

अन्धकार में दीप जला कर, तुम गीता का सार दे गये ।
जो न मृत्यु से कभी मरेंगे, तुम वे दिव्य विचार दे गये ।।

अमर तुम्हारी क्रान्ति ज्योति है,
पारतन्त्र्य के लिये काल तुम ।
तिलक सृष्टि के माथे पर तुम,
स्वतंत्रता के भव्य भाल तुम ।।

तुमने जग में शंख वजा कर,
सोयी मानव जाति जगादी ।
जिससे स्वर्ण दमक कर निकला,
तुमने ऐसी आग लगादी ।।

डूब रही थी नाव हमारी, नाविक तुम उस पार ले गये ।
अन्धकार में दीप जलाकर, तुम गीता का सार दे गये ।।

भारत का गौरव कहता है,
तुम मेरे अभिमान बन गये।
स्वतंत्रता देवी कहती है,
तुम मेरे सम्मान बन गये ॥

दुखियों की वाणी कहती है,
तुम दलितों के त्राण बन गये।
कवियों की वाणी कहती है,
तुम मृतकों के प्राण बन गये ॥

युग युग सस्वर करने वाले, तुम वीणा को तार दे गये।
अन्धकार में दीप जला कर, तुम गीता का सार दे गये ॥



महर्षि दयानन्द

मथ कर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गये।
पत्थर फोड़ निकाली गंगा, पाषाणों की नाव खे गये॥

आये लाये साथ सत्य तुम, स्वप्न छोड़ सारा जग जागा।
गूंज उठा आर्यत्व देश में, भय का भूत आग से भागा॥
तुम बोले, जग ने स्वर पाया, भारत माँ का भाल उठ गया॥
जिसमें स्वयं जा फँसे थे हम, वह अनीति का जाल उठ गया॥

भँवर किनारा बना चरण छू, तैराकर संसार ले गये।
मथ कर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गये॥

प्राणों के स्वर सुनो, देव वह, आज नयी झनकार माँगता।
खँडहर खोदो रचो नया कुछ, समय नया संसार माँगता॥
यह परिवर्त्तनशील विश्व है, कल की दुनिया आज कहाँ है।
उस ऋषि का ही वीज फला जो, जनता का साम्राज्य यहाँ है॥

प्राण धर्म में उस योगी के, प्राण न अपने साथ ले गये।
मथ कर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गये॥

भूली भटकी इस दुनिया को, तुम सत्यार्थ प्रकाश दे गये।
थक कर रुके हुए पैरों को, गति का नया विकास दे गये॥
नयी ज्योति से जाति जगाई, जग को जीवन दान कर गये।
जो चाहे वह पिये प्रेम से, वेदों का रस कलश भर गये॥

ईर्ष्या हुई देवताओं को, जग-मन्दिर का दीप ले गये।
मथ कर अमृत निकाला तुमने, विष पी जग को प्राण दे गये॥



महामना मालवीय जी

प्राणों के स्वर ! भाषा के ध्वज ! मानवता के जीवन-धन !
सुमन चढ़ा संस्कृति की वाणी, करने आई अभिनन्दन ।।
तीर्थ बनारस की चोटी से, बरस रहा है तेरा स्वर ।
तेरी पूजा का प्रसाद है, 'काशी' का अक्षर अक्षर ।।
तेरी सेवाओं का फल है, मातृभूमि का शिक्षित नर ।
बदल गया तेरे त्यागों से, भारत का पत्थर पत्थर ।।
स्वतन्त्रता के अमर पुजारी ! करते रहते दमन शमन ।
प्राणों के स्वर ! भाषा के ध्वज ! मानवता के जीवन-धन !

गये विलायत, लेकिन माँ के–
चरणों की मिट्टी ले कर।
गये कहीं भी मगर न छोड़ी–
मातृभूमि की मुक्ति-डगर॥

गोता मार ढूँढने निकले–
भारत की श्री सागर में।
भर भर पिला रहे भारत को–
वीणा का रस गागर में॥

राष्ट्र--वृद्धि में, जन-सेवा में, बोल रहा तेरा जीवन।
ों के स्वर ! भाषा के ध्वज ! मानवता के जीवन-धन !

तेरे जीवन के प्रकाश में–
देख रहे हैं खोई निधि।
तेरी कठिन तपस्याओं से–
देता जग को विद्या विधि॥

तेरी महावीर सेवा से–
सफल हुए अगणित उत्सव।
जय जय जय जय युग-परिवर्तक !
जय जय जय भारत गौरव !

मुक्ति-गीत बन जाया करते, मुँह से निकले हुए वचन।
प्राणों के स्वर ! भाषा के ध्वज ! मानवता के जीवन-धन !



सन्त विनोबा भावे

धरती के दीपक उजियाले ! जग में अमर तुम्हारा स्वर ।
"भावे" तुम्हें प्रकाश सत्य का, तुम 'वापू' के मृदु अन्तर ॥
भूमि-यज्ञ के याज्ञिक तुमने, धरती का शृङ्गार किया ।
दुखी धरा को देखा तुमने, निज नयनों का नीर दिया ॥
सत्य अहिंसा के दृढ़ यात्री ! जब तुम धरती पर चलते ।
हरी हरी होती यह धरती, घर घर में दीपक जलते ॥
चले गये वापू दुनिया से, तुममें अपना जीवन भर ।
धरती के दीपक उजियाले ! जग में अमर तुम्हारा स्वर ॥

बड़े तपों से प्रकट हुई है, मानो तप की मूर्ति महा।
धरती पर अभाव जितने भी, तुम उन सब की पूर्ति महा ॥
धरती वालो ! इन चरणों में, सारी धरती आज धरो।
भूखों के भगवान सन्त ये, जग में इनके भाव भरो ॥

पूजा के हित मुझे मिला है, आज देवता धरती पर।
धरती के दीपक उजियाले, जग में अमर तुम्हारा स्वर ॥

कर्मों की पगडण्डी पर चल, जग को चलना सिखा रहे।
पीड़ित जग में दीपक से जल, सब को दीपक दिखा रहे ॥
तुम गीता का अमृत पिला कर, जीवन का रस देते हो।
तुम माँझी भारत नौका के, जर्जर नौका खेते हो ॥

सारी धरती न्यौछावर है, इन दो बढ़ते चरणों पर।
धरती के दीपक उजियाले, जग में अमर तुम्हारा स्वर ॥



देशमुकुट जवाहर

ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युञ्जय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे !
ओ गिरते आँसू के सम्बल ! ओ सबकी आँखों के तारे !

जागृति के दीपक जगमग जग, जल रहे ज्योति से कण कण में ।
कल्याणी वाणी अमृतभरी, भव-भूमि सींचती क्षण क्षण में ।।
साकार क्रान्ति चिर शान्ति लिये, पूजा कर रही शहीदों की ।
जय वीर 'जवाहर' सेनानी ! जय हो तेरी उम्मीदों की ।।

तू सबकी आँखों का तारा, सब तेरी आँखों के तारे ।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युञ्जय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे !

धरती माता के सिंहनाद !
तू शान तिरंगे झण्डे की।
झोपड़ियों के जलते दीपक !
तू आन तिरंगे झण्डे की ॥

शोषक के खूनी ओठों को–
कम्पित कर देता तेरा स्वर।
अणु अणु से आग धधक उठती,
खुल जाते तेरे जिधर अधर ॥

तू महा क्रान्ति, तू महा शान्ति, परिवर्तन तेरे जय नारे।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युञ्जय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे!

तू लिये तिरंगा बढ़ा चला,
हत्यारे हारे सता सता।
तेरा घर हर मानव-मन में,
'कमलापति'! तेरा यही पता ॥

ओ राष्ट्रदूत ! ओ क्रान्तिदूत !
कवि की वाणी तेरी लय हो।
स्वातन्त्र्य-दीप के परवाने !
तेरी जय हो, तेरी जय हो !

तेरी आँखों से छलक रहे, दुखियारी के आँसू खारे।
ओ देशमुकुट ! ओ मृत्युञ्जय ! ओ शंखनाद ! ओ अंगारे !



मृत्युञ्जय सुभाष

'दो रक्त और लो आज़ादी', कहते कहते दे गये रक्त ।
प्राणों का दीपक जला गये, भारत माता के अमर भक्त ॥

सोने में तुल कर चले गये, हीरों में तुल कर चले गये ।
भारत माता के मस्तक पर, तुम राजमुकुट धर चले गये ॥
मेरी आज़ादी बता मुझे, तू छोड़ कहाँ आई सुभाष ।
उजियाली आई भारत में, पर साथ नहीं लाई सुभाष ॥

सूना है तेरे बिना देश, सूना है तेरे बिना तख़्त ।
दो रक्त और लो आज़ादी, कहते कहते दे गये रक्त ॥

'नेता जी' की जय जय कहतीं—
आज़ाद हिन्द फौजें आईं।
दिल्ली के लाल क़िले में से—
हथकड़ियाँ स्वर्ण राशि लाईं॥

जय हिन्द घोष से जग छाया,
सारा भारत हो गया अभय।
कह रहा 'ज़फ़र' कह रहा ग़दर—
मेरे सुभाष की हुई विजय॥

वह दीप जलाकर चले गये, जिससे दीपित हो गया तख़्त।
'दो रक्त और लो आज़ादी', कहते कहते दे गये रक्त॥

लाखों आँखों के आगे ही—
आँखों से छिप जाया करते।
सौरभ से सृष्टि सफल होती—
पर फूल कहीं गाया करते॥

दर्शन को मरुथल में बैठे—
युग युग से थके पिपासे मृग।
नेता जी कहीं दीख जायें,
खिल जायें भारत माँ के दृग॥

क्यों दूर बस गये आँखों से, सच्चे सेनानी देश भक्त।
'दो रक्त और लो आज़ादी', कहते कहते दे गये रक्त॥

सरदार पटेल

भारत वल्लभ भाग्य सितारे !
इधर तुम्हारी वाणी हिलती, उधर काँप जाते हत्यारे ॥

तुम स्वतन्त्र साम्राज्ञी वल्लभ-
भाई हो इस सारे जग के।
धन्य ! धन्य !! दीपक भारत के-
दिखा रहे काँटे पग पग के ॥
बन्धन तोड़ गूँथ दी माला-
परिवर्तन अधिकार तुम्हारा।
तुमने लहराया चोटी पर-
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥

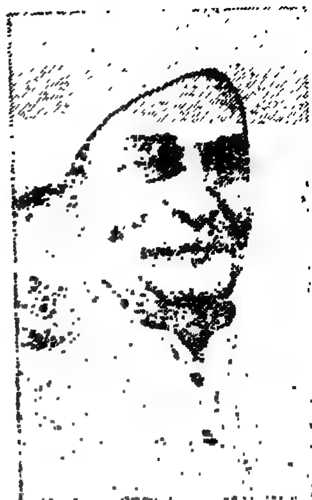
हिंसा के नंगे नर्त्तन पर— नाच रहे तेरे जय कारे।
भारत बल्लभ भाग्य सितारे !

सदा अमर वह प्रान्त तुम्हारा—
जिसमें 'नौ अगस्त' जीवित है।
सदा अमर वह क्रान्ति तुम्हारी—
जिस पर बुढ़िया माँ गर्वित है॥
चले गये तुम जिधर उधर से—
विप्लव के अङ्गारे धधके।
निकल गए तुम जिधर उधर से—
धरती पर नूतन दिन दमके॥

तुम प्रलयंकर शंकर के दृग, सन् सत्तावन के अङ्गारे।
भारत बल्लभ भाग्य सितारे !

जनता की सरकार बन गई,
बने राष्ट्र के निर्माता तुम।
तोड़ लिया अपने से नाता,
जोड़ गये सब से नाता तुम॥
जब तुम मीठे बोल बोलते—
बिखरे हुए हृदय मिल जाते।
वीर ! तुम्हारी दया दृष्टि से—
मुरझाये मानस खिल जाते॥

ऊँचा माथा, चौड़ी छाती, मुक्ति मन्त्र उपदेश तुम्हारे।
भारत बल्लभ भाग्य सितारे !



कर्मवीर राजेन्द्र

तुम धर्म कर्म के प्राण ! तुम्हारी जय हो।
तुम मातृभूमि की जय हो, विश्व-विजय हो ॥

तुम शिक्षक, रक्षक, अजय, अमर परिवर्त्तक,
तुम अग्रदूत, आविष्कर्ता, जग-रंजक,
तुम जय-ध्वनि करते चले तोड़ने बन्धन,
तुमने माथे पर मला शान्ति का चन्दन,

तुम स्वतन्त्रता के दीप अटल निश्चय हो।
तुम धर्म कर्म के प्राण ! तुम्हारी जय हो ॥

तुम मूर्तिमान सभ्यता, अमर वाणी हो,
रण-वीर ! तुम्हारी भाषा कल्याणी हो,
तुम थके हुए मज़दूर-हृदय की ध्वनि हो,
तुम उजड़े टूटे नीड़ निलय की ध्वनि हो,

तुम जग-मन्दिर के दीप ! ज्योति अक्षय हो ।
तुम धर्म कर्म के प्राण ! तुम्हारी जय हो ॥

तुम थके बटोही की अन्तिम मंज़िल हो,
तुम कमल सदा ऊपर न कभी ग़ाफ़िल हो,
तुम मन के राजा और भिखारी के धन,
गंगा धारा की तरह स्वच्छ कोमल मन,

तुम उन्नति-पथ के पथिक, अजय निर्भय हो ।
तुम धर्म कर्म के प्राण ! तुम्हारी जय हो ॥



मौलाना आज़ाद

जय जय मौलाना आज़ाद !
तेरी अमर रहेगी याद।

आज़ादी तेरा ईमान,
राष्ट्र-पताका तेरी शान।
तूने बहुत किये बलिदान,
तू भारत माँ का सम्मान।

स्वतन्त्रता तेरा जयनाद,
जय जय मौलाना आज़ाद !
तेरी अमर रहेगी याद।

जोड़ रहे शासन आज़ाद,
तोड़ रहे बन्धन आज़ाद।
मिला रहे दो मन आज़ाद,
तन मन धन जीवन आज़ाद।

तूने देश किया आज़ाद,
जय जय मौलाना आज़ाद!
तेरी अमर रहेगी याद।

तू आज़ादी का इतिहास,
तू भारत का दिव्य प्रकाश।
तुझ में हिन्दुस्तानी रक्त,
बने रहो भारत के भक्त।

बूढ़े 'ज़फ़र शाह' की याद,
जय जय मौलाना आज़ाद!
तेरी अमर रहेगी याद।



ख़ान बादशाह

सत्य के दीप ! शान्त सामन्त !
धन्य ! 'सरहद के गाँधी' सन्त !
तुम्हारी बात बात में प्रीति,
मार्ग की ज्योति तुम्हारी रीति ।
मिल रहे गले, हो रही जीत,
गा रहे मानवता के गीत ।
कर रहे पारतन्त्र्य का अन्त,
सत्य के दीप ! शान्त सामन्त !

पठानों के गाँधी प्रह्लाद !
तुम्हारी हृदय हृदय में याद ।
दृगों में मधु रस की बरसात,
सत्य शिव शान्ति तुम्हारी बात ।

कर रहे लूट फूट का अन्त,
सत्य के दीप ! शान्त सामन्त !

शान्त चित अखिल-भूमि केवीर !
तोड़ते मानव की जंजीर ।
बोलते जब तुम धरणी धीर !
अहिंसा की खिचती तस्वीर ।

तुम्हारी वाणी अमर अनन्त,
सत्य के दीप ! शान्त सामन्त !



राजगोपालाचार्य

कूटनीतिज्ञ राजगोपाल ! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षडयन्त्र।
टूटते बड़ों बड़ों के यन्त्र ॥

तुम्हारी दूरदर्शिता देख—
चकित है यह सारा संसार।
तुम्हारा आत्म-बुद्धि-बल देख-
काँप जाते हैं अत्याचार ॥

वरसती हैं वाणी से क्रान्ति,
वरसते आँखों से अंगार।
तुम्हारी ही सूझों से यहाँ—
वन गई भारतीय सरकार॥
फूकते तुम संकुचित विचार, तुम्हें है विस्तृत जग से प्यार,
भेद से भरा तुम्हरा मन्त्र।
कूटनीतिज्ञ राजगोपाल! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षडयन्त्र।
टूटते वड़ों वड़ों के यन्त्र॥

वीर! तुम वढ़े लक्ष्य की ओर,
रौंदते हुए मार्ग के शूल।
वीच में पड़ी हुई है नाव,
लगाने निकले उसको कूल॥
वताओ कोई ऐसा मार्ग,
न आये यहाँ गुलामी भूल।
यहीं रचना है सुख का स्वर्ग
खिलाना है काँटों में फूल॥
तिरंगे झण्डे का अभिमान, हमारा प्यारा हिन्दुस्तान,
'चक्रवर्ती' ने किया स्वतन्त्र।
कूटनीतिज्ञ राजगोपाल! तुम्हारी चाल तोड़ती जाल,
जाल में फँस जाते षडयन्त्र।
टूटते वड़ों वड़ों के यन्त्र॥



विद्रोही जय प्रकाश

चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
राष्ट्र का झण्डा फहराने ।।

सन बयालीस के क्रान्तिदूत !
भारत माँ के सच्चे सपूत !
आँखों में आग लिये निकले,
जय जय के राग लिये निकले।

चला खौलता खून आग पर पानी बरसाने,
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने।
राष्ट्र का झण्डा फहराने ।।

तुम गये जहाँ जय हुई वहाँ,
तुम अभी वहाँ, तुम अभी यहाँ ।
तुम सारे भारत की निधि हो,
तुम मातृभूमि की गति विधि हो ।

जय जय जय जय जयप्रकाश ? जय जलते परवाने !
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने ।
राष्ट्र का झण्डा फहराने ॥

तेजस्वी जलते सूर्य-चक्र !
जब दृष्टि तुम्हारी हुई वक्र--
अंग्रेज़ों के हिल गये हृदय,
क़ैदी भारत की हुई विजय ।

जय जय जय भारत--प्रकाश ! जय भारत दीवाने !
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने ।
राष्ट्र का झण्डा फहराने ॥

सच्चे समाजवादी किसान !
ओ निर्धन श्रमिकों के विधान !
रच नई सृष्टि धन दे श्रम से,
आलोक दिखा जीवन क्रम से ।

कुचल रहे धनवान यहाँ पर मोती के दाने ।
चले सींकचे तोड़ दुर्ग पर झण्डा लहराने ।
राष्ट्र का झण्डा फहराने ॥



त्यागवीर कृपलानी

कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत ।
ये कीर्ति गीत—

सीख लो आज़ादी का मन्त्र
करो मिल भारतवर्ष स्वतंत्र,
यही है प्रजातन्त्र का यन्त्र,
एक रस यत्र तत्र सर्वत्र,
बात में प्रीत ।
कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत ।
ये कीर्ति गीत ।।

कलाओं का सम्बल लो साथ,
आँसुओं की छल छल लो साथ,
किसानों के श्रमकण लो साथ,
ताज वह तख़्त तुम्हारे हाथ।
तुम्हारी जीत।
कर्मवीर कृपलानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत।
ये कीर्ति गीत ॥

त्याग की अमर स्फूर्ति है तू,
दया की दिव्य मूर्ति है तू,
रूपमय देश-भक्ति है तू,
शान्ति है तू, शक्ति है तू,
शस्त्र है गीत !
कर्मवीर कृपालानी की मन्त्रणा अमर यन्त्रणा जीत।
ये कीर्ति गीत ॥



पट्टाभि सीतारामैया

शान्त स्वभाव ! वीर भारत के ! स्वतन्त्रता के गौरव गीत !
खद्दर की उज्ज्वल चादर से– झाँक रही है जग की जीत ।।

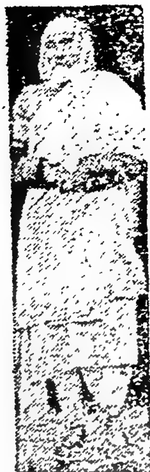
अश्रु बहाती हुई कलम यह, कैसे चित्रित करे चरित्र ।
बस इतना ही लिख सकती है- भावुक ! तुम दुनिया के मित्र ।।
दुखी दृगों से झाँक रही है- भारत माता की तस्वीर ।
कर्मवीर की करुण कहानी- शक्ति द्रौपदी का चिर चीर ।।

ये उनके इतिहास जिन्हों की- रण में गई ज़िन्दगी बीत ।
शान्त स्वभाव ! वीर भारत के ! स्वतन्त्रता के गौरव गीत !

गीत भरे गम्भीर दृगों में-
छाया रहता मधुर प्रभात।
गाँधी के अनुयायी तुम हो,
कुमुदनियों की दीपित रात॥

तम का पर्दा चीर, पथिक ! तुम-
लेकर निकले दिव्य प्रकाश।
राम-राज्य को साथ ढूँढता-
दीपों से सज्जित आकाश॥

त्याग चुके सुख दुख की दुनिया, खोज रहे भारत की जीत।
शान्त स्वभाव ! वीर भारत के ! स्वतन्त्रता के गौरव गीत॥



राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

पुरुषोत्तम राजर्षि यशस्वी, भारत और भारती के धन !
तुम दीपक से जले रात में, दीप्त हुआ भारत का आंगन ।।

तुम को पा कर भव्य भाल पर, हिन्दी की बिन्दी मुस्काती ।
त्याग तपस्या के प्रताप तुम, वाणी गीत तुम्हारे गाती ।।
अभय मृदुल भावों के दाता, तुम दृढ़ता के अमर हिमालय ।
अमर ! तुम्हारी चरण ज्योति से, अशिव अँधेरा बना शिवालय ।।

खिली तुम्हारी चरण-चाँदनी, चाँद बना माथे का चन्दन ।
पुरुषोत्तम राजर्षि यशस्वी, भारत और भारती के धन ।।

कण्ठ कण्ठ में पहिनाते हो, शब्दों के फूलों की माला।
वरदपुत्र ! वरदान सदृश तुम, तप तप कर दे रहे उजाला॥
अमर सन्तरण महासिन्धु में, लहरों के प्रतिकूल चले तुम।
तूफ़ानी अँधियारे पथ पर, दिव्य दीप से सदा जले तुम॥

फूल फूल के गीत बने तुम, गूंजा भारत माँ का आँगन।
पुरुषोत्तम राजर्षि यशस्वी, भारत और भारती के धन॥

तुम अचला के अचल पुत्र हो, हिले न भीषण तूफानों में।
चित्र तुम्हारा दमक न पाया, मेरे इन रूखे गानों में॥
पथिक ! तुम्हारे अभिनन्दन को, प्यासे नयनों में मधु जल है।
मेरे पास न हीरे मोती, पूजा भरा हृदय-उत्पल है॥

तुम भारत के भव्य भाल हो, तुम हो गंगा जल से पावन।
पुरुषोत्तम राजर्षि यशस्वी, भारत और भारती के धन॥



आसफ़ अली

तेरे भावों की रेखायें- बुझते दीप जला जाती हैं।
तेरे जीवन की घटनायें उलझे धागे सुलझाती हैं॥

बढ़े तुम्हारे क़दम, चल पड़ी आज़ादी झण्डा लहराती।
चली तुम्हारी अन्तर-ज्वाला क्रांति-क्रांति के गीत सुनाती॥
तेरी जीवन-ज्योति पथिक को भूली मंज़िल दिखलाती है।
तेरी मुख-मुद्रा शासन की गहरी नीव हिला जाती है॥

तेरी आँखें महा क्रांति के भीषण शोले सुलगाती हैं।
तेरे भावों की रेखायें बुझते दीप जला जाती हैं॥

भेद-भाव से दूर दूर रह,
देश-प्रेम के भाव जगाते।
पास बुलाते आज़ादी को,
अंग्रेज़ों को दूर भगाते॥
गाते गीत एक हो जाओ,
छोड़ो फूट, तोड़ दो बन्धन।
चीख़ चीख़ कर सुना रहे हो—
बहरों को बुढ़िया का क्रन्दन॥

कस कर पड़ी हुई पैरों में, माँ की ज़ंजीरें गाती हैं।
तेरे भावों की रेखायें बुझते दीप जला जाती हैं॥

यह परवाना मातृभूमि के—
लिये प्राण देने आया है।
यह सपूत जननी के आँसू—
आँचल में भर कर लाया है॥
यह दीवाना आज़ादी का—
झण्डा लहराने आया है।
यह विद्रोही युग-परिवर्त्तक!
जग में इन्क़लाब लाया है।

आसफ़अली अरुण की किरणें पथ के गड्ढे दिखलाती हैं।
तेरे भावों की रेखायें बुझते दीप जला जाती हैं॥

महापुरुष



राजा महेन्द्र प्रताप

निर्वासित ! तेरा अभिनन्दन ।
चल दिये कमर कस बाँध कफ़न ॥
भारत आज़ाद कराने को,
आपस की फूट मिटाने को,
कण कण में फूका अमर मन्त्र,
कारा से करने को स्वतन्त्र,
जय धन्य धन्य भारत के धन !
निर्वासित ! तेरा अभिनन्दन ॥

'वर्लिन' में फूका कभी मन्त्र,
कर दिये करोड़ों मन स्वतन्त्र,
तुम प्रजातन्त्र, षड्यन्त्र मन्त्र,
तुम मूर्त्तिमान भारत स्वतन्त्र,

कानों में निर्धन का क्रन्दन।
निर्वासित! तेरा अभिनन्दन॥

ज़िन्दगी देश के अर्पण की,
सारी सम्पदा समर्पण की,
सारी ज़िन्दगी तपस्या की,
तब हल यह कठिन समस्या की,

कर दिया राष्ट्र में परिवर्तन।
निर्वासित! तेरा अभिनन्दन॥



राजकुमारी अमृतकौर

अमृतमयी आदर्शमयी तुम, जीवन की सुन्दर अभिलाषा।
मूर्तिमान अर्चना वन गई, मानो गाँधी जी की भाषा॥

सरल ! तुम्हारी शक्ति शान्ति है, सेवा है सौन्दर्य तुम्हारा।
स्वस्थ करो भारत का कण कण, लहराये जीवन की धारा॥
स्वर्ण किरण सा हृदय मृदुल है, बुद्धि कर्म की राह सुनहरी।
भव्य करें भारत की भाषा, देवि ! तुम्हारे भाव सुनहरी॥

फैली हुई महामारी में, तुम्हें देखती जन की आशा।
अमृतमयी आदर्शमयी तुम, जीवन की सुन्दर अभिलाषा॥

पथ पर जलीं दीपिका सी तुम, शिशु से भोले मन की यति हो।
मानस की झनकार मनोहर, हारे हुए पथिक की गति हो॥
गाये तुम ने गीत देश के, झूम उठी जग की हरियाली।
कर्ममयी तेरे जीवन से, मुस्काती है डाली डाली॥

ऐसा राग सुनाओ कोई, रहे न जग में शेष निराशा।
अमृतमयी आदर्शमयी तुम, जीवन की सुन्दर अभिलाषा॥



विजय लक्ष्मी

विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने।
बढ़ चली करने या मरने ।।

फूंक दी अमेरिका में आग,
जगाये भारत माँ के भाग।
गा रही विजय रागिनी राग,
जाग ओ भारत! अब तो जाग।।

मृत्युञ्जयि चल पड़ी जवानी मुर्दों में भरने।
विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने।
बढ़ चली करने या मरने ।।

चल पड़ी राष्ट्र-मुकुट की बहन,
दिखाने फिर से लङ्का-दहन,
तोड़ने बन्धन की ज़ंजीर,
जोड़ने भारत की तक़दीर,

विजय-ध्वजा चल पड़ी, ताज भारत के सर धरने।
विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने।
वढ़ चली करने या मरने ॥

हृदय में भर कर भारत-भक्ति,
पगों में भर कर नारी-शक्ति,
नयी पगडण्डी रचती चली,
दीप में मधुर स्नेह सी जली,

भारत-वीणा चली, ज़िन्दगी के विचार भरने।
विजय-ज्योति चल पड़ी क्रान्ति सी परिवर्त्तन करने।
वढ़ चली करने या मरने ॥



सरोजिनी नायडू

क्रान्ति की मीठी चिनगारी, कोकिला से गूंजे मृदु वोल,
वोल अनमोल राष्ट्र के मान !
आग में तपे स्वर्ण की चमक,
चमकती तलवारों की दमक,
थकी भावुकता की छाया,
किसानों दीनों की माया,
ध्वजा की शक्ति ! ध्वजा की आन !
क्रान्ति की मीठी चिनगारी, कोकिला से गूंजे मृदु वोल,
वोल अनमोल राष्ट्र के मान !

डूबती नौका की पतवार,
रुद्र दृग भस्मसात् अङ्गार,
विजयिनी भारत नारी एक–
कर रही दुनिया का अभिषेक,

कर रही प्राणों का बलिदान !

क्रान्ति की मीठी चिनगारी, कोकिला से गूंजे मृदु बोल,
बोल अनमोल राष्ट्र के मान !

कुमुदनी यह खिलती दिन रात,
विश्व-वाणी नारी की बात,
बन्दनी आँखों की बरसात,
साथ अम्बर के तारे सात,

देश की जान, देश की आन !

क्रान्ति की मीठी चिनगारी, कोकिला से गूंजे मृदु बोल,
बोल अनमोल राष्ट्र के मान !



महारानी लक्ष्मीबाई

पश्चिम से ज्वाला आई थी, पानी में आग लगाने को।
पर पानी प्यासा बैठा था, जग की ज्वाला पी जाने को ॥
'डलहोज़ी' के शोले बरसे, भारत माता की छाती पर।
झाँसी की रानी जाग उठी, हो गई खड़ी ऊँचा सर कर ॥
ललकार उठी तलवार खींच, अँग्रेज़ो ! भारत को छोड़ो।
हुंकार उठी मुस्कान नयी, वीरो ! जागो बन्धन तोड़ो ॥
वह उठी आग सी धरती से, मेघों में बिजली सी चमकी।
वह भारत के हर कोने में, सूरज की लाली सी दमकी ॥
मानो सूरज की प्रखर किरण, झाँसी की रानी बन आई।
जो स्वतन्त्रता की पूजा को, थाली में सर रख कर लाई ॥

वह दावानल सी धधक उठी, तलवार उठा बढ़ चली आग।
भारत की बेटी प्रिय के घर, शोणित से भरने चली माँग॥
वह सुकुमारी सतरंगी सी, घोड़े पर चढ़कर निकल पड़ी।
उस शक्तिमयी के साथ साथ, भारत की सेना हुई खड़ी॥

पुरुषों के झुके नयन जागे, जब नारी को बढ़ते देखा।
वह नारी थी या लक्ष्मण की, सीता-रक्षा को थी रेखा॥
रुक गये पैर अंग्रेज़ों के, जब झाँसी की तलवार उठी।
झुक गये शीश सरदारों के, जब रानी की ललकार उठी॥

जो छाती ताने तोप लिये, उस सुकुमारी की ओर बढ़े।
उन की छाती पर रानी के, घोड़े के चारों टाप चढ़े॥
उस मतवाली की रक्षा में, भारत की चिनगारियाँ चलीं।
उन महाशक्तियों के स्वर से, रण में लाशें अनगिनत जलीं॥

खप्पर ले ले कर हुंकारी, वे अंगारों सी लाल लाल।
प्रलयंकर शंकर के दृग में, मानो सहसा आये उबाल॥
अपनी स्वतन्त्रता लेने को, शोणित की पिचकारियाँ चलीं।
दुश्मन की चिता जलाने की, मरघट की तैयारियाँ चली॥

ढालों पर भाले टूट गये, टकराये सर तलवारों से।
धरती सारी हो गई लाल, धरती की अमर कटारों से॥
उन डसने वाले नागों पर, रानी के पग बढ़ जाते थे।
रानी के चरणों में लाखों सर कट कट कर चढ़ जाते थे॥

वह एक अकेली लाखों में, शंकर की ज्वाला सी निकली।
मानो नंगी तलवारों में चमकी तलवारों की विजली॥
रानी जिस ओर झपट दौड़ी, उस ओर नया शमशान बना।
उसकी तलवारों का पानी, भारत माँ का अभिमान बना॥

हर सैनिक के मस्तक में घुस, तलवार रक्त पीती निकली।
धरती की प्यास वुझाती थी रानी के हाथों की विजली॥
जब रानी माँ के मन्दिर में शोणित का अर्घ्य चढ़ाती थी।
जब रानी माँ के मस्तक पर, शोणित का तिलक लगाती थी॥

तब अपने ही बन गये शत्रु, मिल गये शत्रु से जा जा कर।
भारत की बेटी पर झपटे, भारत के टुकड़े खा खा कर॥
जब अपने घोड़ों के आगे, रानी ने अपनों को देखा।
रुक गया हाथ बढ़ता बढ़ता, खिंच गई स्वप्न की सी रेखा॥

उस पल में रानी के धड़ पर, कितनों ही की तलवार पड़ी।
गिर गया हाथ कट कर बायां, दाँये से फिर भी खूब लड़ी॥
यह कैसी अद्भुत होली है अपने लोहू से आप रँगी।
तलवार सहारा थी जिस पर, वे खोपड़ियाँ अनगिनत टँगी॥

रानी के गर्म लहू से जब रानी का घोड़ा नहा गया।
जब रानी को गिरते देखा, तब मौन न उस से रहा गया॥
वह घायल रानी को सँभाल, मतवाला हो कर निकल गया।
सब खड़े देखते रहे किन्तु, घोड़ा उन सब को कुचल गया॥

वह घोड़ा अपनी रानी को, साधू की कुटिया में लाया।
साधू ने रानी को उतार, मुँह में गंगाजल टपकाया।।
रानी ने मुँह खोला बोली, हे राम शरण में आती हूँ।
मेरी झाँसी तुझको प्रणाम, मैं अब झाँसी से जाती हूँ।।

कहते कहते तज दिये प्राण, साधू के हाथों में शव था।
कुटिया से बाहर दूरी पर, हत्यारों का भीषण रव था।।
साधू ने क्षण भर को सोचा, फिर क्षण भर को वह शव देखा।
जिसकी अलकों में शोणित की, थी अद्भुत सिन्दूरी रेखा।।

माथे पर शोणित की बिन्दी, हाथों में शोणित का सुहाग।
तन पर थी शोणित की साड़ी, जैसे अरुणोदय का विहाग।।
यह अमर सुहागिन प्रिय के घर, करके सोलह शृङ्गार चली।
वह चली गई पर कुटिया के- आगये निकट वे धूर्त छली।।

साधू ने शव को उठा लिया, धूनी से ली जलती ज्वाला।
चट आग लगा दी कुटिया में उड़ चला धुवां काला काला।।
पल में लपटों से नभ छाया, लपटों में रानी गाती थी।
कुटिया के बाहर गोरों की, सेना शर्माती जाती थी।।

रानी की जय, रानी की जय, साधू जलता जलता बोला।
रानी की जय, रानी की जय, सूरज ढलता ढलता बोला।।
इतिहास सदा ही बोलेगा, जय झाँसी वाली रानी की।
जय हो जय हो जय हो जय हो जय हो उस अमर भवानी की।।



भारत वन्दना !

अमर अखण्डित राष्ट्र ज्योति जय ! जय भारत सुख दाता !
सागर गा गा पग पखारता– हिमगिरि अर्घ्य चढ़ाता ॥

जय अनन्त सुख दाता ।
जय जय भारत माता ॥

हरे भरे ग्रामों की निधि कृषि, रवि शशि की उजियाली ।
ब्रह्म-स्रोत से ब्रह्मपुत्र तक, दीपित दिव्य दिवाली ॥
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से सज ! खड़ी अभंगुर भाषा ।
फूल फूल पर थिरक झूमती ! जन मन की अभिलाषा ॥

कोटि कोटि कण्ठों से गूंजा, जय जय जय जग त्राता
अमर अखण्डित राष्ट्र ज्योति जय ! जय भारत सुख दाता
सागर गा गा पग पखारता, हिमगिरि अर्घ्य चढ़ाता ।

जय अनन्त सुख दाता !
जय जय भारत माता ।

न्यौछावर होते चरणों में, श्रम कण के मधु मोती
सरिताओं के कल कल स्वर से तेरी पूजा होती ।
कीर्तिस्तम्भ प्रेम की धारा, कीट भृंग गुण आत्मा
आदर्शों से आदृत अर्चित, अभ्युदयिक परमात्मा ।

वसुन्धरा के मुकुट मनोहर ! जय आलोक विधाता
अमर अखण्डित राष्ट्र ज्योति जय, जय भारत सुख दाता
सागर गा गा पग पखारता हिमगिरि अर्घ्य चढ़ाता

जय अनन्त सुख दाता
जय जय भारत माता ।

205